# भारतीय चित्रिकला (भाग- 5)

## दक्कनी क्षेत्रों में चित्रिकारी

- दक्कन में चित्रिकला के प्रारंभकि केन्द्र अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा में थे।
- प्रारंभ में यहाँ चित्रिकला का वकिास मुगल शैली से स्वतंत्र रूप में हुआ, कतिु बाद में 17वीं-18वीं सदी में इस पर मुगल शैली का अधकिाधकि प्रभाव पड़ा।

## अहमदनगर

- अहमदनगर चित्रिकला के प्रारंभकि उदाहरण में 'तारीफ़-ए-हुसैनशाही' का नाम लयिा जाता है जो इंडो-इस्लामकि चित्रिकारी का सुंदर उदाहरण है।
- अन्य उदाहरणों में 'हडिोला राग', नजिाम शाह द्वतिीय (1591&96) के प्रतरिूप तथा 1605 ई. का मलकि अंबर का चित्र महत्त्वपूर्ण है जो राष्ट्रीय संग्रहालय, दल्लिी में है।

## बीजापुर

- बीजापुर में अली आदलि शाह (1558&80 ई.) और इब्राहमि द्वतिीय (1580&1627) ने चित्रिकला को संरक्षण प्रदान कयिा।
- 'नजूम-अल-उलूम' (वज्ञिान के सतिारे) नामक वश्विकोश को अली आदलि शाह प्रथम के शासनकाल में सचित्र कयिा गया।
- इब्राहमि द्वतिीय एक संगीतकार थे और इसी वषिय पर 'नवरसनामा' नामक एक पुस्तक भी लखिी, उनके कुछ प्रतरिूप अनेक संग्रहालयों में मौजूद हैं।

## गोलकुंडा

- मोहम्मद कुली कुतुब शाह (1580&1611) के समय चित्रांकति पाँच आकर्षक चित्रिकलाओं का एक समूह गोलकुंडा के लघु चित्रों में वशिष्टि है।
- गोलकुंडा चित्रिकला के अन्य उत्कृष्ट उदाहरण हैं- 'मैना पक्षी के साथ महलिा' (1605), सूफी कवकिी सचित्र 'पांडुलपिि' और दो प्रतकिृतयिाँ (मो.अली की)।

## तंजावुर

- 18वीं सदी के अंत में सुदृढ़ आरेखन, छायाकरण की तकनीकों में अभवृद्धि तथा चटकीले वर्णों का प्रयोग जैसी चित्रिकला की वशिषताओं ने तंजावुर चित्रिकला में उन्नतकिी।
- सचित्र काष्ठ फलक, जसि पर राम के राज्याभषिक को दर्शाया गया है, तंजावुर चित्रिकला की सजावटी और आलंकारकि शैली का उदाहरण है।
- यहाँ लघु चित्रिकला में जो शंकुरूप मुकुट दखिाई देता है, वह तंजौर चित्रिकला की प्रतीकात्मक वशिषता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/indian-art-part-5